वेदोंमें राष्ट्रियताकी उदात्त भावना

(डॉ० श्रीमुरारीलालजी द्विवेदी, एम्०ए०, पी-एच्०डी०)

'वेद' भारत ही नहीं, अपितु विश्वके समस्त मनीषियोंके लिये ज्ञान-स्रोत है। ज्ञानार्थक 'विद' धातुसे 'वेद' शब्द बना है, जिसका अर्थ होता है ज्ञान प्राप्त करना। किसी विषयका ज्ञान उसे जानकर ही किया जा सकता है। इस प्रकार 'वेद' शब्द ज्ञानका पर्याय है।

वेदोंकी महिमा अपार है। वे ज्ञानके भण्डार, धर्मके मूल स्रोत और भारतीय संस्कृतिके मूल आधार हैं। वेद-वाक्य स्वत:प्रमाण हैं तथा अनादि और अपौरुषेय हैं, अत: वेद ब्रह्मस्वरूप हैं।

वैदिक साहित्यमें मुख्यत: चार वेद हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेदमें १०५५२ मन्त्र हैं, इनका लक्ष्य मनुष्यको ज्ञान देना ही है। यजुर्वेदमें १९७५ मन्त्र हैं, जो उत्तम कर्मोंकी ओर प्रेरित करते हैं। सामवेदमें १८७५ मन्त्र हैं, जिनमें ईश्वर-स्मरण और साधनाका वर्णन है। अथर्ववेदका विषय योग है। 'अथर्व' शब्दका शाब्दिक अर्थ (अ=थर्व) एकाग्रतासे है। इस वेदके ५९७७ मन्त्रोंमें राष्ट्रधर्म, समाजव्यवस्था, गृहस्थधर्म, अध्यात्मवाद, प्रकृतिवर्णन आदिका विस्तृत एवं व्यावहारिक ज्ञान समाहित है।

वेद-वाक्य राष्ट्रप्रेम, देशसेवा और उत्सर्गके प्रेरक हैं, इसलिये वेद आर्योंके सर्वप्रधान तथा सर्वमान्य धार्मिक ग्रन्थ हैं। इसी कारण वेदोंका आज भी राष्ट्रव्यापी प्रचार है। हमारे देवालयों एवं तीर्थस्थानोंमें आज भी उनका प्रभाव अक्षुण्ण है। वेदोंमें अपने गौरवशाली अतीतकी झाँकी देखकर आज भी हम अपना मस्तक गर्वोन्नत कर सकते हैं।

वेदोंमें राष्ट्रियताकी उदात्त भावनाका भरपूर समावेश है। ऋग्वेद (१०।१९१।२)-में जगदीश्वरसे प्रार्थना की गयी है—

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

अर्थात् 'हे जगदीश्वर! आप हमें ऐसी बुद्धि दें कि हम सब परस्पर हिलमिल कर एक साथ चलें; एक-समान मीठी वाणी बोलें और एक-समान हृदयवाले होकर स्वराष्ट्रमें उत्पन्न धन-धान्य और सम्पत्तिको परस्पर समानरूपसे बाँटकर भोगें। हमारी हर प्रवृत्ति राग-द्वेषरहित परस्पर प्रीति बढ़ानेवाली हो।'

ऋग्वेदके 'इन्द्र-सूक्त' (१०।४७।२)-में जगदीश्वरसे स्वराष्ट्रके लिये धन-धान्यवान् पुत्रोंसे समृद्ध होनेकी कामना की गयी है—

स्वायुधं स्ववसं सुनीथं चतु:समुद्रं धरुणं रयीणाम्।
चर्कृत्यं शंस्यं भूरिवारमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दा:॥

तात्पर्य यह कि 'हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन्! आप हमें धन-धान्यसे सम्पन्न ऐसी संतान प्रदान कीजिये, जो उत्तम एवं अमोघ शस्त्रधारी हो, अपनी और अपने राष्ट्रकी रक्षा करनेमें समर्थ हो तथा न्याय, दया-दाक्षिण्य

और सदाचारके साथ जन-समूहका नेतृत्व करनेवाली हो, साथ ही नाना प्रकारके धनोंको धारण कर परोपकारमें रत एवं प्रशंसनीय हो तथा लोकप्रिय एवं अद्भुत गुणोंसे सम्पन्न होकर जन-समाजपर कल्याणकारी गुणोंकी वर्षा करनेवाली हो।'

राष्ट्रकी रक्षामें और उसकी महत्तामें ऐसी ही अनेक ऋचाएँ पर्यवसित हैं, जिनमेंसे यहाँ कुछका उल्लेख किया जा रहा है, जैसे—

उप सर्प मातरं भूमिम्।

(ऋग्वेद १०। १८। १०)

'मातृभूमिकी सेवा करो।'

निम्न मन्त्रसे मातृभूमिको नमन करते हुए कहा गया है—

नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्या।

(यजुर्वेद ९। २२)

अर्थात् 'मातृभूमिको नमस्कार है, मातृभूमिको नमस्कार है।'

यहाँ 'पृथ्वी' का अर्थ मातृभूमि या स्वदेश ही उपयुक्त है। अतः हमें अपने राष्ट्रमें सजग होकर नेतृत्व करने-हेतु एक ऋचा यह उद्घोष करती है—

वयꣳराष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः॥

(यजुर्वेद ९। २३)

अर्थात् 'हम अपने राष्ट्रमें सावधान होकर नेता बनें।'

क्रान्तदर्शी, शत्रुघातक अग्निकी उपासना-हेतु निम्न मन्त्रमें प्रेरित किया गया है—

कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम्॥

(सामवेद १। १। ३२)

'हे स्तोताओ! यज्ञमें सत्यधर्मा, क्रान्तदर्शी, मेधावी, तेजस्वी और रोगोंका शमन करनेवाले शत्रुघातक अग्निकी स्तुति करो।'

अथर्ववेदके 'भूमि-सूक्त' में ईश्वरने यह उपदेश दिया है कि अपनी मातृभूमिके प्रति मनुष्योंको किस प्रकारके भाव रखने चाहिये। वहाँ अपने देशको माता समझने और उसके प्रति नमस्कार करनेका स्पष्ट शब्दोंमें उल्लेख किया गया है—

सा नो भूमिर्वि सृजतां माता पुत्राय मे पयः॥

(अथर्व० १२। १। १०)

'पृथ्वीमाता अर्थात् मातृभूमि, मुझ पुत्रके लिये दूध आदि पुष्टिकारक पदार्थ प्रदान करे।'

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।

(अथर्व० १२। १। १२)

'भूमि (स्वदेश) मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।'

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।

(अथर्व० १२। १। ६३)

'हे मातृभूमि! तू मुझे अच्छी तरह प्रतिष्ठित करके रख।'

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥

(अथर्व० ३। ३०। १)

'परस्पर हृदय खोलकर एकमना होकर कर्मशील बने रहो। तुरंत जन्मे बछड़ेको छेड़नेपर गौ जैसे सिंहिनी बनकर आक्रमण करनेको दौड़ती है, ऐसे तुम लोग सहृदयजनोंकी आपत्तिमें रक्षाके लिये कमर कसे रहो।'

अतएव हमें चाहिये कि अपनी मातृभूमिकी रक्षा-हेतु आत्मबलिदान करनेके लिये हम सदा तत्पर रहें—

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम॥

(अथर्व० १२। १। ६२)

'हे मातृभूमि! तेरी सेवा करनेवाले हम नीरोग और आरोग्यपूर्ण हों। तुमसे उत्पन्न हुए समस्त भोग हमें प्राप्त हों, हम ज्ञानी बनकर दीर्घायु हों तथा तेरी सुरक्षा-हेतु अपना आत्मोत्सर्ग करनेके लिये भी सदा संनद्ध रहें।'

इस प्रकार वेद ज्ञानके महासागर हैं तथा विश्व-वाङ्मयकी अमूल्यनिधि एवं भारतीय आर्यसंस्कृतिके मूल आधार हैं। उनमें राष्ट्रियताकी उदात्त भावनाका भरपूर समावेश है। अतः हम सभी राष्ट्रवासियोंको चाहिये कि हम राष्ट्ररक्षामें समर्थ हो सकें, इसके लिये वेदकी शिक्षाओंको समग्ररूपसे ग्रहण करें।